आध्यात्मिक भजन संग्रह

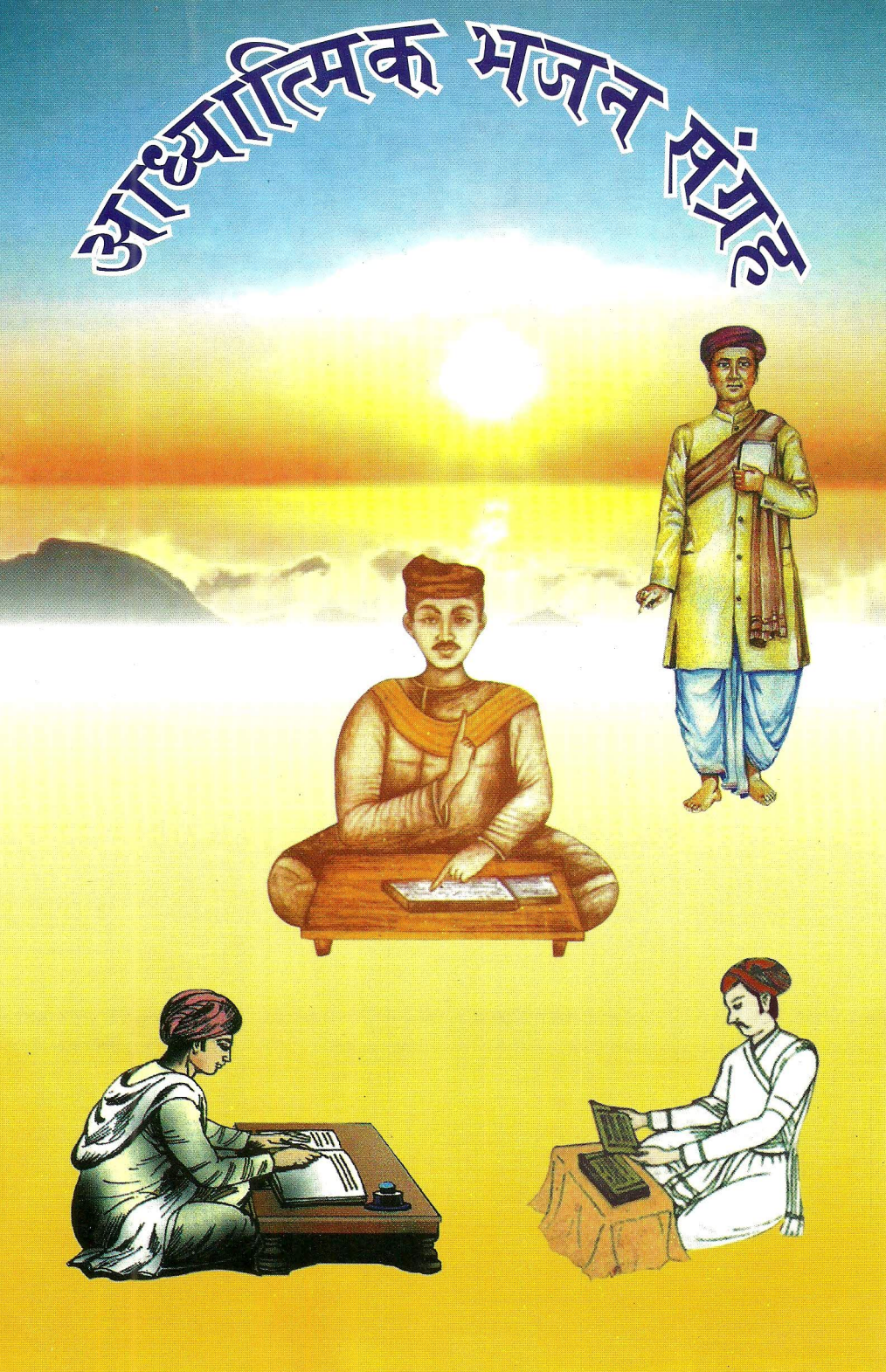

आध्यात्मिक भजन संग्रह

संकलन व सम्पादन :
सौभाग्यमल जैन
सी-107, सावित्रीपथ, बापूनगर जयपुर

प्रकाशक :
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015
फोन : 0141-2707458, 2705581
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रथम संस्करण ५ हजार
(११ फरवरी, २००८)
माघ शुक्ला पंचमी
आचार्य कुन्दकुन्द जन्म दिवस
द्वितीय संस्करण ५ हजार
(२६ जुलाई, २०१०)
वीर शासन जयन्ति

योग १० हजार

आर्थिक सहयोग

अध्यात्मप्रेमी स्व. पिताश्री सौभाग्यमलजी की भावनाओं के अनुसार श्रीमान् श्री कैलाशचन्दजी बोहरा, बापूनगर, जयपुर ने विशेष आर्थिक सहयोग प्रदान किया, एतदर्थ धन्यवाद।

मूल्य : चार रुपए

मुद्रक :
प्रिण्ट 'ओ' लैण्ड,
बाईस गोदाम, जयपुर

प्रकाशकीय

(द्वितीय संस्करण)

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के माध्यम से आध्यात्मिक भजन संग्रह नामक इस लघु कृति का प्रकाशन करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इस लघु पुस्तिका में कविवर पण्डित द्यानतरायजी, भूधरदासजी, बुधजनजी, दौलतरामजी, भागचन्दजी तथा भैय्या भगवतीदासजी जैसे समर्थ कवियों के चुने हुए आध्यात्मिक भजन प्रस्तुत किये जा रहे हैं। यह सभी भजन प्रेरक, सारगर्भित व दैनिक शास्त्रसभा में पठनीय हैं।

साधर्मी श्री सौभाग्यमलजी जैन, जयपुर ने पूर्व में आध्यात्मिक भजन संग्रह (बृहत्) के संपादन का कार्य कष्टपूर्वक किया था। हमने पुनः उनसे इस छोटे कार्य के लिए निवेदन किया। ९२ वर्ष की इस वृद्धावस्था में आपने इस काम को उत्साह के साथ संपादित करके दिया है, अतः ट्रस्ट उनका आभारी है।

भजनों के साथ-साथ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की गतिविधियों से समाज को परिचित कराया जा सके – इस उद्देश्य से संस्था का परिचय भी इसमें प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है सारगर्भित भजनों का रसास्वादन करते हुए आप सभी पाठक संस्था की कार्यप्रणाली से भलीभाँति परिचित हो सकेंगे।

भजनों का चयन कर उन्हें व्यवस्थित रूप प्रदान करने में पण्डित शचीन्द्रजी शास्त्री, गढ़ाकोटा का सराहनीय सहयोग रहा है। टाइपसैटिंग हेतु श्री कैलाश शर्मा व मुद्रण व्यवस्था हेतु विभाग के मैनेजर श्री अखिल बंसल बधाई के पात्र हैं।

आप सभी इस कृति से लाभान्वित हों, इसी कामना के साथ –

– ब्र. यशपाल जैन, एम.ए.

प्रकाशन मंत्री

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

हमारे यहाँ प्राप्त महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के प्रवचन

प्रवचनरत्नाकर भाग 1 से 11 तक/नयप्रज्ञापन
दिव्यध्वनिसार प्रवचन/समाधितंत्र प्रवचन
मोक्षमार्ग प्रवचन भाग-1,2,3,4/ज्ञानगोष्ठी
श्रावकधर्मप्रकाश/भक्तामर प्रवचन
सुखी होने का उपाय भाग 1 से 8 तक
वी.वि. प्रवचन भाग 1 से 6 तक/कारणशुद्धपर्याय

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रकाशन

समयसार(ज्ञायकभावप्रबोधिनि)/समयसार का सार
समयसार अनुशीलन सम्पूर्ण भाग 1,2,3;4,5
प्रवचनसार (ज्ञायज्ञेयप्रबोधिनि)/प्रवचनसार का सार
प्रवचनसार अनु. भाग-1 से 3/णमोकार महामंत्र
चिन्तन की गहराईयाँ/सत्य की खोज/बिखरे मोती
बारह भावना : एक अनुशीलन/धर्म के दशलक्षण
बालबोध भाग 1,2,3/तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 1,2
वी.वि. पाठमाला भाग 1,2,3/ध्यान का स्वरूप
आत्मा ही है शरण/सूक्तिसुधा/आत्मानुशासन
पं. टोडरमल व्यक्तित्व और कर्तृत्व
47 शक्तियाँ और 47 नय/रक्षाबन्धन और दीपावली
तीर्थंकर भगवान महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ
भ. ऋषभदेव/प्रशिक्षण निर्देशिका/आप कुछ भी कहो
क्रमबद्धपर्याय/दृष्टि का विषय/गागर में सागर
पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव/जिनवरस्य नयचक्रम्
पश्चात्ताप/मैं कौन हूँ/मैं स्वयं भगवान हूँ/अर्चना
मैं ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ/महावीर वंदना (कैलेण्डर)
णमोकार एक अनुशीलन/मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार
रीति-नीति/गोली का जवाब गाली से भी नहीं
समयसार कलश पद्धानुवाद/योगसार पद्धानुवाद
कुन्दकुन्दशतक पद्धानुवाद/शुद्धात्मशतक पद्धानुवाद

पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के प्रकाशन

जान रहा हूँ देख रहा हूँ/जम्बू से जम्बूस्वामी
विदाई की बेला/जिन खोजा तिन पाईयां
ये तो सोचा ही नहीं/अहिंसा के पथ पर
सामान्य श्रावकाचार/षट्कारक अनुशीलन
सुखी जीवन/विचित्र महोत्सव
संस्कार/इन भावों का फल क्या होगा
यदि चूक गये तो

अन्य प्रकाशन

मोक्षशास्त्र/चौबीस तीर्थंकर महापुराण
बृहद जिनवाणी संग्रह/रत्नकरण्डश्रावकाचार
समयसार/प्रवचनसार/क्षत्रचूड़ामणि
समयसार नाटक/मोक्षमार्ग प्रकाशक
सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका भाग-2 (पूर्वार्द्ध+उत्तरार्द्ध) एवं भाग3
बृहद द्रव्यसंग्रह/बारसाणुवेक्खा
नियमसार/योगसार प्रवचन/समयसार कलश
तीनलोकमंडल विधान/ज्ञानस्वभाव ज्ञेयस्वभाव
आचार्य अमृतचन्द्र : व्यक्तित्व और कर्तृत्व
पंचास्तिकाय संग्रह/सिद्धचक्र विधान
भावदीपिका/कार्तिकेयानुप्रेक्षा/मोक्षमार्ग की पूर्णता
परमभावप्रकाशक नयचक्र/पुरुषार्थसिद्ध्युपाय
इन्द्रध्वज विधान/धवलासार/द्रव्य संग्रह
रामकहानी/गुणस्थान विवेचन/जिनेन्द्र अर्चना
सर्वोदय तीर्थ/निर्विकल्प आत्मानुभूति के पूर्व
कल्पद्रुम विधान/तत्त्वज्ञान तरंगणी/रत्नत्रय विधान
नवलब्धि विधान/बीस तीर्थंकर विधान
पंचमेरु नंदीश्वर विधान/रत्नत्रय विधान
जैनतत्त्व परिचय/करणानुयोग परिचय
आ. कुन्दकुन्द और उनके टीकाकार
कालजयी बनारसीदास/आध्यात्मिक भजन संग्रह
छहढाला (सचित्र)/शीलवान सुदर्शन
जैन विधि-विधान/क्या मृत्यु अभिशाप है?
चौबीस तीर्थंकर पूजा/चौसठ ऋद्धि विधान
जैनधर्म की कहानियाँ भाग 1 से 15 तक
सत्तास्वरूप/दशलक्षण विधान/आ. कुन्दकुन्ददेव
पंचपरमेष्ठी विधान/विचार के पत्र विकार के नाम
आचार्य कुन्दकुन्द और उनके पंच परमागम
परीक्षामुख/मुक्ति का मार्ग/युगपुरुष कानजीस्वामी
अलिंगग्रहण प्रवचन/जिनधर्म प्रवेशिका
वीर हिमाचलतैं निकसी/वस्तुस्वातंत्र्य
समयसार : मनीषियों की दृष्टि में/पदार्थ-विज्ञान
व्रती श्रावक की ग्यारह प्रतिमाएँ/सुख कहाँ है ?
भरत-बाहुबली नाटक/अपनत्व का विषय
सिद्धस्वभावी ध्रुव की ऊर्ध्वता/अष्टपाहुड़
शास्त्रों के अर्थ समझने की पद्धति

मंगलाचरण

(दोहा)

तीन भुवन के मुकुट मणि, गुण अनन्तमय शुद्ध।
नमों सिद्ध परमात्मा, वीतराग अविरुद्ध।।१।।
तीन भुवन थिति जानके, आप आपमय होय।
परतें भये विरक्त अति, नमों महामुनि सोय।।२।।
तीन भुवन मन्दिर विषैं, अर्थ प्रकाशन हार।
जैन वचन दीपक नमों, ज्ञान करण उरधार।।३।।
तीन भवन में जे लसैं, चैत्य चैत्यगृह सार।
ते सब बन्दों भावयुत, हित कारण शुभकाज।।४।।
धर्म मोक्ष को भूलि के, कारज करि है कोय।
सो परभव विपदा लहे, या भव निंदक होय।।५।।
देव मनुष नारक पशु, सबे दुःखी करि चाहि।
बिना चाह निरभय सुखी, वीतराग बिन नाहिं।।६।।
नरनारी मोहे गये, कंचन कामिनि माहिं।
अविचल सुख तिन ही लिया, जो इनके बस नाहिं।।७।।
मोह नींद से जाग रे, सुन रे मूरख जीव।
मिथ्या मति को छांड कर, जिनवाणी रस पीव।।८।।

१. प्रभु दर्शन कर जीवन की, भीड़ भगी मेरे कर्मन की

प्रभु दर्शन कर जीवन की, भीड़ भगी मेरे कर्मन की ।।टेर ।।
भव वन भ्रमता हारा था, पाया नहीं किनारा था ।
घड़ी सुखद आई सुवरण की, प्रभु दर्शन कर... ।।१ ।।
शान्ति छवि मन भाई है, नैनन बीच समाई है ।
दूर हटूँ नहीं पल छिन भी, प्रभु दर्शन कर... ।।२ ।।
निज पद का 'सौभाग्य' वरूं, अरु न किसी की चाह करूँ।
सफल कामना हो मन की, प्रभु दर्शन कर... ।।३ ।।

२. कर कर आतमहित रे प्रानी .....

जिन् परिनामनि बंध होत है, सो परनति तज दुखदानी।।कर. ।।
कौन पुरुष तुम कहाँ रहत हौ, किहि की संगति रति मानी ।
ये परजाय प्रगट पुद्गलमय, ते तैं क्यों अपनी जानी ।।कर. ।।१ ।।
चेतन-जोति झलक तुझ माहीं, अनुपम सो तैं विसरानी ।
जाकी पटतर लगत आन नहिं, दीप रतन शशि सूरानी ।।कर. ।।२ ।।
आपमें आप लखो अपनो पद, 'द्यानत' करि तन-मन-वानी ।
परमेश्वरपद आप पाइये, यौं भाषैं केवलज्ञानी ।।कर. ।।३ ।।

३. जानत क्यों नहिं रे, हे नर आतमज्ञानी .....

राग-दोष पुद्गल की संगति, निहचै शुद्ध निशानी।।जानत. ।।
जाय नरक पशु नर सुर गति में, ये परजाय विरानी ।
सिद्ध-स्वरूप सदा अविनाशी, जानत विरला प्रानी ।।जानत. ।।१ ।।
कियो न काहू हरै न कोई, गुरु-सिख कौन कहानी ।
जनम-मरन-मल-रहित अमल है, कीच बिना ज्यों पानी ।।जानत. ।।२ ।।
सार पदारथ है तिहुँ जग में, नहिं क्रोधी नहिं मानी ।
'द्यानत' सो घटमाहिं विराजै, लख हूजै शिवथानी ।।जानत. ।।३ ।।

४. मैं निज आतम कब ध्याऊँगा.....

रागादिक परिनाम त्याग कै, समता सौं लौ लाऊँगा।।
मन-वच-काय जोग थिर करकै, ज्ञान समाधि लगाऊँगा।
कब हौं क्षपकश्रेणि चढ़ि ध्याऊँ, चारितमोह नशाऊँगा।।१।।
चारों करम घातिया क्षय करि, परमातम पद पाऊँगा।
ज्ञान-दरश-सुख-बल भंडारा, चार अघाति बहाऊँगा।।२।।
परम निरंजन सिद्ध शुद्ध पद, परमानंद कहाऊँगा।
'द्यानत' यह सम्पति जब पाऊँ, बहुरि न जग में आऊँगा।।३।।

५. धिक! धिक! जीवन समकित बिना .....

दान शील तप व्रत श्रुत पूजा, आतम हेत न एक गिना।।धिक.।।
ज्यों बिनु कन्त कामिनी शोभा, अंबुज बिनु सरवर सूना।
जैसे बिना एकड़े बिन्दी, त्यों समकित बिन सरब गुना।।धिक.।।१।।
जैसे भूप बिना सब सेना, नींव बिना मन्दिर चुनना।
जैसे चन्द बिहूनी रजनी, इन्हैं आदि जानो निपुना।।धिक.।।२।।
देव जिनेन्द्र, साधु गुरु, करुना, धर्मराग व्योहार भना।
निहचै देव धरम गुरु आतम, 'द्यानत' गहि मन वचन तना।।धिक.।।३।।

६. नहिं ऐसो जनम बारंबार .....

कठिन कठिन लह्यो मनुष भव, विषय भजि मति हार।।नहिं.।।
पाय चिन्तामन रतन शठ, छिपत[1] उदधि मँझार।
अंध हाथ बटेर आई, तजत ताहि गँवार।।नहिं.।।१।।
कबहुँ नरक तिर्यंच कबहूँ, कबहुँ सुरग बिहार।
जगतमहिं चिरकाल भ्रमियो, दुर्लभ नर अवतार।।नहिं.।।२।।
पाय अमृत पाँय धोवै, कहत सुगुरु पुकार।
तजो विषय कषाय 'द्यानत', ज्यों लहो भवपार।।नहिं.।।३।।

१. फैंकता है।

७. अब मेरे समकित सावन आयो

(राग मलार)

अब मेरे समकित सावन आयो।।टेक।।
बीति कुरीति मिथ्यामति ग्रीषम, पावस सहज सुहायो।।
अनुभव दामिनि दमकन लागी, सुरति घटा घन छायो।
बोलै विमल विवेक पपीहा, सुमति सुहागिनि भायो।।१।।अब मेरे.।।
गुरुधुनि गरज सुनत सुख उपजै, मोर सुमन विहसायो[१]।
साधक भाव अंकूर उठे बहु, जित तित हरष सवायो।।२।।अब मेरे.।।
भूल धूल कहिं भूल न सूझत, समरस जल झर लायो।
'भूधर' को निकसै अब बाहिर, निज निरचू घर पायो।।३।।अब मेरे.।।

८. आयो रे बुढ़ापो मानी, सुधि बुधि बिसरानी

(राग बंगला)

आयो रे बुढ़ापो मानी, सुधि बुधि बिसरानी।।टेक।।
श्रवन की शक्ति घटी, चाल चालै अटपटी,
देह लटी[२], भूख घटी, लोचन झरत पानी।।१।।आया रे.।।
दांतन की पंक्ति टूटी, हाड़न की संधि छूटी,
काया की नगरि लूटी, जात नहिं पहिचानी।।२।।आया रे.।।
बालों ने वरन फेरा, रोगों ने शरीर घेरा,
पुत्रहू न आवे नेरा, औरों की कहा कहानी।।३।।आया रे.।।
'भूधर' समुझि अब, स्वहित करोगे कब,
यह गति ह्वै है जब, तब पछतै हैं प्राणी।।४।।आया रे.।।

९. मैंने देखा आतमरामा

(राग काफी कनड़ी)

मैंने देखा आतमरामा।।मैंने.।।टेक।।
रूप फरस रस गंध तैं न्यारा, दरस-ज्ञान-गुनधामा।

१. आनन्दित हो रहा है। २. ढीली पड़ गई

नित्य निरंजन जाकै नाहीं, क्रोध लोभ मद कामा।।१।।मैंने.।।
भूख प्यास सुख दुख नहिं जाकै, नाहिं वन पुर गामा।
नहिं साहिब नहिं चाकर भाई, नहीं तात नहिं मामा[१]।।२।।मैंने.।।
भूलि अनादि थकी जग भटकत, लै पुद्गल का जामा[२]।
'बुधजन' संगति जिनगुरु की तैं, मैं पाया मुझ ठामा[३]।।३।।मैंने.।।

१०. हमकौं कछू भय ना रे

(राग-सोरठ)

हमकौं कछू भय ना रे, जान लियौ संसार।।हमकौं.।।टेक।।
जो निगोद में सो ही मुझमें, सो ही मोक्ष मँझार।
निश्चय भेद कछू भी नाहीं, भेद गिनैं संसार।।१।।हमकौं.।।
परवश ह्वै आपा विसारिके, राग दोष कौं धार।
जीवत मरत अनादि कालतैं, यौं ही है उरझार।।२।।हमकौं.।।
जाकरि जैसैं जाहि समय में, जो होवत जा द्वार।
सो बनि है टरि है कछु नाहीं, करि लीनौं निरधार[४]।।३।।हमकौं.।।
अग्नि जरावै पानी बोवै, बिछुरत मिलत अपार।
सो पुद्गल रूपी मैं 'बुधजन', सबकौ जाननहार।।३।।हमकौं.।।

११. हे जिन मेरी, ऐसी बुधि कीजै

हे जिन मेरी, ऐसी बुधि कीजै।टेक।।
रागद्वेष दावानलतें बचि, समता रसमें भीजै।।१।।
परकों त्याग अपनपो निजमें, लाग न कबहूँ छीजै।।२।।
कर्म कर्मफल माहि न राचैं, ज्ञानसुधारस पीजै।।३।।
मुझ कारज के तुम कारन वर, अरज 'दौल' की लीजै।।४।।

१२. धनि मुनि जिन यह, भाव पिछाना

धनि मुनि जिन यह, भाव पिछाना।।
तन व्यय वांछित प्रापति मानी, पुण्य उदय दुख जाना।।धनि.।।

१. माता २. तन ३. भीतर ४. निर्णय

एकविहारी सकल ईश्वरता, त्याग महोत्सव माना।
सब सुखको परिहार सार सुख, जानि रागरुष भाना।।१ ।।धनि. ।।
चित्स्वभावको चिंत्य प्रान निज, विमल ज्ञानदृगसाना।
'दौल' कौन सुख जान लह्यौ तिन, करो शांतिरसपाना।।२ ।।धनि. ।।

१२. आतम रूप अनुपम अद्‌भुत

आतम रूप अनुपम अद्‌भुत, याहि लखैं भव सिंधु तरो ।।टेक ।।
अल्पकाल में भरत चक्रधर, निज आतमको ध्याय खरो।
केवलज्ञान पाय भवि बोधे, ततछिन पायौ लोकशिरो[१] ।।१ ।।
या बिन समुझे द्रव्य-लिंगमुनि, उग्र तपनकर भार भरो।
नवग्रीवक पर्यन्त जाय चिर, फेर भवार्णव माहिं परो।।२ ।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरन तप, येहि जगत में सार नरो।
पूरब शिवको गये जाहिं अब, फिर जैहैं, यह नियत करो।।३ ।।
कोटि ग्रन्थको सार यही है, ये ही जिनवानी उचरो।
'दौल' ध्याय अपने आतमको, मुक्तिरमा तब वेग बरो।।४ ।।

१३. चेतन यह बुधि कौन सयानी

चेतन यह बुधि कौन सयानी, कही सुगुरु हित सीख न मानी ।।
कठिन काकताली ज्यौं पायौ, नरभव सुकुल श्रवन जिनवानी ।।चेतन. ।।
भूमि न होत चाँदनीकी ज्यौं, त्यौं नहिं धनी ज्ञेय को ज्ञानी।
वस्तुरूप यौं तू यौं ही शठ, हटकर पकरत सोंज विरानी।।१ ।।चेतन. ।।
ज्ञानी होय अज्ञान राग-रुष कर निज सहज स्वच्छता हानी।
इन्द्रिय जड़ तिन विषय अचेतन, तहाँ अनिष्ट इष्टता ठानी।।२ ।।चेतन. ।।
चाहै सुख, दुख ही अवगाहै, अब सुनि विधि जो है सुखदानी।
'दौल' आपकरि आप आपमैं, ध्याय त्याय लय समरससानी।।३ ।।आप. ।।

१. मुक्ति

१४. हम तो कबहुँ न निज घर आये

हम तो कबहुँ न निज घर आये।।टेक।।
परघर फिरत बहुत दिन बीते, नाम अनेक धराये।।हम तो.।।
परपद निजपद मानि मगन ह्वै, परपरनति लपटाये।
शुद्ध बुद्ध सुख कन्द मनोहर, चेतन भाव न भाये।।१।।हम तो.।।
नर पशु देव नरक निज जान्यो, परजय बुद्धि लहाये।
अमल अखण्ड अतुल अविनाशी, आतमगुन नहिं गाये।।२।।हम तो.।।
यह बहु भूल भई हमरी फिर, कहा काज पछताये।
'दौल' तजौ अजहूँ विषयनको, सतगुरु वचन सुनाये।।३।।हम तो.।।

१५. चिन्मूरत दृग्धारी की मोहे

चिन्मूरत दृग्धारी[१] की मोहे, रीति लगत है अटापटी।।टेक।।
बाहिर नारकि कृत दुख भोगै, अंतर सुखरस गटागटी।
रमत अनेक सुरनि संग पै तिस, परनति तैं नित हटाहटी।।१।।
ज्ञानविराग शक्ति तैं विधि-फल, भोगत पै विधि घटाघटी।
सदन निवासी तदपि उदासी, तातैं आस्रव छटाछटी।।२।।
जे भवहेतु अबुध के ते तस, करत बन्ध की झटाझटी।
नारक पशु तिय षँढ विकलत्रय, प्रकृतिन की ह्वै कटाकटी।।३।।
संयम धर न सकै पै संयम, धारन की उर चटाचटी।
तासु सुयश गुनकी 'दौलतके' लगी, रहै नित रटारटी।।४।।

१६. सन्त निरन्तर चिन्तत ऐसैं

(राग ठुमरी)

सन्त निरन्तर चिन्तत ऐसैं, आतमरूप अबाधित ज्ञानी।।टेक।।
रोगादिक तो देहाश्रित हैं, इनतें होत न मेरी हानी।
दहन दहत ज्यों दहन न तदगत, गगन दहन ताकी विधि ठानी।।१।।

---

१. सम्यग्दृष्टि की

वरणादिक विकार पुद्गलके, इनमें नहिं चैतन्य निशानी।
यद्यपि एकक्षेत्र-अवगाही, तद्यपि लक्षण भिन्न पिछानी।।२।।
मैं सर्वांगपूर्ण ज्ञायक रस, लवण खिल्लवत लीला ठानी।
मिलौ निराकुल स्वाद न यावत, तावत पर परनति हित मानी।।३।।
'भागचन्द्र' निरद्वन्द निरामय, मूरति निश्चय सिद्ध समानी।
नित अकलंक अबंक शंक बिन, निर्मल पंक बिना जिमि पानी।।४।।

१७. आतम अनुभव आवै जब निज

(राग गौरी)

आतम अनुभव आवै जब निज, आतम अनुभव आवै।
और कछू न सुहावे जब निज, आतम अनुभव आवै।।टेक।।
जिनआज्ञाअनुसार प्रथम ही, तत्त्व प्रतीति अनावै[१]।
वरनादिक रागादिक तैं निज, चिह्न-भिन्न फिर ध्यावै।।१।।
मतिज्ञान फरसादि विषय तजि, आतम सन्मुख धावै।
नय प्रमान निक्षेप सकल श्रुत, ज्ञान विकल्प नसावै।।२।।
चिदऽहं शुद्धोऽहं इत्यादिक, आपमाहिं बुध आवै।
तन पै बज्रपात गिरतैं हू, नेकु न चित्त डुलावै।।३।।
स्व-संवेद आनंद बढ़ै अति, वचन कह्यो नहिं जावै।
देखन जानन चरन तीन विच, इक स्वरूप लखावै।।४।।
चितकर्ता चित कर्मभाव चित, परनति क्रिया कहावै।
साधक साध्य ध्यान ध्येयादिक, भेद कछू न दिखावै।।५।।
आत्मप्रदेश अदृष्ट तदपि, रसस्वाद प्रगट दरसावै।
ज्यों मिश्री दीसत न अंधको, सपरस मिष्ट चखावै।।६।।
जिन जीवनके संसृत, पारावार पार निकटावै।
'भागचन्द' ते सार अमोलक, परम रतन वर पावै।।७।।

१. करता है

१८. परनति सब जीवनकी

परनति सब जीवनकी, तीन भाँति वरनी।
एक पुण्य एक पाप, एक रागहरनी।।टेक।।
तामें शुभ अशुभ अंध[१], दोय करैं कर्मबंध।
वीतराग परनति ही, भवसमुद्र तरनी।।१।।
जावत शुद्धोपयोग, पावत नाहीं मनोग।
तावत ही करन जोग, कही पुण्य करनी।।२।।
त्याग शुभ क्रियाकलाप, करो मत कदाच पाप।
शुभमें न मगन होय, शुद्धता विसरनी।।३।।
ऊँच ऊँच दशा धारि, चित्त प्रमाद को विडारि।
ऊँचली दशातैं मति, गिरो अधो धरनी।।४।।
'भागचन्द' या प्रकार, जीव लहै सुख अपार।
याके निरधार स्याद-वाद की उचरनी।।५।।

१९. धन्य धन्य है घड़ी आजकी

धन्य धन्य है घड़ी आजकी, जिनधुनि श्रवन परी।
तत्त्वप्रतीत भई अब मेरे, मिथ्यादृष्टि टरी।।टेक।।
जड़तैं भिन्न लखी चिन्मूरति, चेतन स्वरस भरी।
अहंकार ममकार बुद्धि पुनि, परमें सब परिहरी।।१।।
पापपुण्य विधिबंध अवस्था, भासी अति दुखभरी।
वीतराग विज्ञानभावमय, परिनति अति विस्तरी।।२।।
चाह-दाह विनसी वरसी पुनि, समता मेघझरी।
बाढ़ी[२] प्रीति निराकुल पदसों, 'भागचन्द' हमरी।।३।।

२०. नहिं गोरो नहिं कारो चेतन

(जंगला)

नहिं गोरो नहिं कारो चेतन, अपनो रूप निहारो रे।।टेर।।
दर्शन ज्ञान मई चिन्मूरत, सकल करम ते न्यारो रे।।१।।

---

१. अंधे के समान २. बढ़ने लगीं

जाके बिन पहिचान जगतमें, सह्यो महा दुख भारो रे।
जाके लखे उदय हो तत्क्षण, केवल ज्ञान उजारो रे।।२।।
कर्म जनित पर्याय पायके, कीनों तहाँ पसारो रे।
आपा पर को रूप न जान्यो, तातैं भव उरझारो रे।।३।।
अब निजमें निजकूं अवलोकूं, जो हो भव सुलझारो रे।
'जगतराम' सब विधि सुख सागर, पद पाऊँ अविकारो रे।।४।।

२१. जगत गुरु कब निज आतम ध्याऊँ

(दुर्गा)

जगत गुरु कब निज आतम ध्याऊँ।।टेर।।
नग्न दिगम्बर मुद्रा धरके, कब निज आतम ध्याऊँ।
ऐसी लब्धि होय कब मोकूँ, जो वाँछित पाऊँ।।१।।
कब गृह त्याग होऊँ बनवासी, परम पुरुष लौ लाऊँ।
रहूँ अडोल जोड पद्मासन, करम कलंक खिपाऊँ।।२।।
केवल ज्ञान प्रकट कर अपनो, लोकालोक लखाऊँ।
जन्म जरा दुख देत जलांजलि, हो कब सिद्ध कहाऊँ।।३।।
सुख अनन्त विलसूं तिंह थानक, काल अनन्त रहाऊँ।
'मानसिंह' महिमा निज प्रकटे, बहुरि न भव में आऊँ।।४।।

२२. चिदानंद भूलि रह्यो सुधि सारी

(राग उझाज़ जोगीरासा)

चिदानंद भूलि रह्यो सुधि सारी, तू तो करत फिरै म्हारी म्हारी।।टेर।।
मोह उदय तैं सबही तिहारी, जनक मात सुत नारी।
मोह दूरि कर नेत्र उघारो, इन में कोई न तिहारी।।१।।
झाग समान जीवना जोवन, पर्वत नाला कारी।
धनपति रंक समान सबन को, जात न लागे वारी।।२।।

जुवा मांस मधु अरु वेश्या, हिंसा चौरी जारी।
सप्त व्यसन में रत्त होय के, निजकुल कीन्हो कारी।।३।।
पुन्य पाप दोउ लार चलत हैं, यह निश्चय उरधारी।
धर्म द्रव्य तोय स्वर्ग पठावै, पाप नरक में डारी।।४।।
आतम रूप निहार भजो जिन, धर्म मुक्ति सुखकारी।
'बुधमहाचंद' जानि यह निश्चय, जिनवर नाम सम्हारी।।५।।

२३. अरे मन पापनसों नित डरिये

(राग आसावरी)

अरे मन पापनसों नित डरिये।।टेर।।
हिंसा झूँठ वचन अरु चोरी, परनारी नहीं हरिये।
निज परको दुखदायन डायन, तृष्णा वेग विसरिये।।१।।अरे.।।
जासों परभव बिगड़े वीरा, ऐसो काज न करिये।
क्यों मधु-बिन्दु विषय के कारण, अंधकूप में परिये।।२।।अरे.।।
गुरु उपदेश विमान बैठके, यहाँ ते बेग निकरिये।
'नयनानन्द' अचल पद पावे, भवसागर सो तिरिये।।३।।अरे।।

२४. ऐसो नर भव पाय गंवायो,

(राग काँफी होरी)

ऐसो नर भव पाय गंवायो।।टेर।।
धनकूं पाय दान नहिं दीनो, चारित चित नहिं लायो।
श्री जिनदेव की सेव न कीनी, मानुष जन्म लजायो,
जगत में आयो न आयो।।१।।ऐसो.।।
विषय कषाय बढ़ो प्रति दिन दिन, आतम बल सु घटायो।
तजि सतसंग भयो तू कुसंगी, मोक्ष कपाट लगायो,
नरक को राज कमायो।।२।।ऐसो.।।

रजक श्वान सम[1] फिरत निरंकुश, मानत नाहिं मनायो।
त्रिभुवनपति होय भयो है भिखारी, यह अचरज मोहि आयो,
कहांते कनक फल खायो।।३।।ऐसो.।।
कंद मूल मद्य मांस भखन कूं, नित प्रति चित्त लुभायो।
श्री जिन बचन सुधा सम तजि कै, 'नयनानंद' पछतायो,
श्री जिन गुण नहीं गायो।।४।।ऐसो.।।

२५. आज मैं परम पदारथ पायौ

आज मैं परम पदारथ पायौ, प्रभुचरनन चित लायौ।टेक।।
अशुभ गये शुभ प्रगट भये हैं, सहज कल्पतरु छायौ।।१।।
ज्ञानशक्ति तप ऐसी जाकी, चेतनपद दरसायो।।२।।
अष्टकर्म रिपु जोधा जीते, शिव अंकुर जमायौ।।३।।
'दौलतराम' निरख निज प्रभो को उर आनन्द न समायो।।४।।

२६. अपनी सुधि भूल आप, आप दुख उपायौ

अपनी सुधि भूल आप, आप दुख उपायौ,
ज्यौं शुक नभचाल विसरि, नलिनी लटकायो।।अपनी.।।
चेतन अविरुद्ध शुद्ध, दरश बोधमय विशुद्ध।
तजि जड़-रस-फरस रूप, पुद्गल अपनायौ।।१।।अपनी.।।
इन्द्रियसुख दुख में नित्त, पाग राग रुख में चित्त।
दायकभव विपति वृन्द[2], बन्धको बढ़ायौ।।२।।अपनी.।।
चाह दाह दाहै, त्यागौ न ताहि चाहै।
समतासुधा न गाहै, जिन निकट जो बतायौ।।३।।अपनी.।।
मानुषभव सुकुल पाय, जिनवर शासन लहाय।
'दौल' निजस्वभाव भज, अनादि जो न ध्यायौ।।४।।अपनी.।।

---

१. धोबी के कुत्ते की तरह २. समूह

२७. जिया तुम चालो अपने देश

जिया तुम चालो अपने देश, शिवपुर थारो शुभ थान।।टेक. ।।
लख चौरासी में बहु भटके, लह्यौ न सुखको लेश।।१ ।।जिया. ।।
मिथ्यारूप धरे बहुतेरे; भटके बहुत विदेश।।२।।जिया. ।।
विषयादिक सेवत दुख पाये, भुगते बहुत कलेश।।३।।जिया. ।।
भयो तिरजंच नारकी नर सुर, करि करि नाना भेष।।४।।जिया. ।।
अब तो निजमें निज अवलोको जहां न दुःख को लेश।।५ ।।जिया. ।।
'दौलतराम' तोड़ जग नाता, सुनो सुगुरु उपदेश।।६ ।।जिया. ।।

२८. दुविधा कब जै है या मन की

(राग-सारंग)

दुविधा कब जै है या मन की।
कब निजनाथ निरंजन सुमिरों, तज सेवा जन जनकी।।१ ।। दुविधा. ।।
कब रुचिसौं पीवैं दृगचातक, बूँद अखय पद धनकी।
कब शुभध्यान, धरौं समता गहि, करूँ न ममता तनकी।।२ ।।दुविधा. ।।
कब घट अंतर रहै निरन्तर, दिढ़ता सुगुरु वचन की।
कब सुख लहौं भेद परमारथ, मिटै धारना धन की।।३ ।।दुविधा. ।।
कब घर छाँड़ होऊँ एकाकी, लिये लालसा वनकी।
ऐसी दशा होय कब मेरी, बलिबलि जाऊँ वा छिनकी।।४ ।।दुविधा. ।।

२९. चेतन तू तिहुँकाल अकेला

(राग-रामकली)

नदी नाव संजोग मिलैं ज्यों, त्यों कटुँब का मेला, चेतन. ।।टेक. ।।
यह संसार असार रूप सब, ज्यों पटपेखन खेला।
सुख संपति शरीर जलबुद्बुद, विनशत नाहीं बेला।।१ ।।चेतन. ।।

मोह मगन आतम गुन भूलत, परि तोहि गल जेला।
मैं मैं करत चहूँ गति डोलत, बोलत जैसे छेला।।२।।चेतन.।।
कहत 'बनारसी' मिथ्यामत तज, होय सुगुरुका चेला।
तास वचन परतीत आन जिय, होइ सहज सुलझेला।।३।।चेतन.।।

३०. अरे जिया, जग धोखे की टाटी

झूठा उद्यम लोक करत है, जिसमें निशदिन घाटी।।टेक.।।
जान बूझके अन्ध बने हैं, आंखन बांधी पाटी।।१ ।।अरे.।।
निकल जायेंगे प्राण छिनकमें, पड़ी रहैगी माटी।।२ ।।अरे.।।
'दौलतराम' समझ मन अपने, दिल की खोल कपाटी।।३ ।।अरे.।।

३१. जो जो देखी वीतराग ने, सो-सो होसी वीरा रे

जो-जो देखी वीतराग ने, सो-सो होसी वीरा रे।
अनहोनी होसी नहिं कबहुँ, काहे होत अधीरा रे।।
जो-जो देखी.।।१।।
समयो एक बढ़ै नहीं घटसी, जो सुख-दुःख की पीरा रे।
तू क्यों सोच करै मन मूरख, होय वज्र ज्यों हीरा रे।।
जो-जो देखी.।।२।।
लगै न तीर कमान बान कहुँ, मार सकै नहीं मीरा रे।
तू सम्हारि पौरुष बल अपनो, सुख अनन्त तो तीरा रे।।
जो-जो देखी.।।३।।
निश्चय ध्यान धरहु वा प्रभु को, जो टारे भव भीरा रे।
'भैया' चेत धरम निज अपनो, जो तारे भव नीरा रे।।
जो-जो देखी.।।४।।

३२. आयु रही अब थोडी कहा करै

(राग काफी होरी)

आयु रही अब थोड़ी कहा करै मोरी मोरी ।।टेर ।।
मात तात परलोक सिधारे, पास रही ना गौरी ।
सुत मित बाँधव राज संपदा, छिन छिन विनशत सोरी[१],
फेर नहीं मिलत बहोरी ।।१ ।।
तन पिंजर अब जरजर दीखत, लाल पडे मुख ओरी ।
रींट गींट कफ मिटते नाहीं, दांत दाढ़ जड़ छोडी,
सहे दुख दरद घनोरी ।।२ ।।
रोग पिशाच लगे तन भीतर, अग्नि भई मंदोरी ।
वात पित्त कफ नित घटबढ़ हैं, यों बहु विपति सहोरी,
कहत नहीं आवै ओरी ।।३ ।।
कर पग कंपत नाड[२] दरद सिर, कमर कूब[३] निकसो री ।
लकड़ी डिंगत हाथ डोकर के, तोभी समझे न घोरी,
याकी मति मोह मरोरी ।।४ ।।
या विधि परख पिछान 'जौहरी', तनसे ममत तजो री ।
आपही आप रमो निज उरमें, आय मिले शिव गोरी ।
होय परमानन्द बहोरी ।।५ ।।

३३. चेतन काहे को पछतावता

(राग ख्याल तमाशा व गजल)

चेतन काहे को पछतावता, यहाँ कोई नहीं है तेरा ।।टेर ।।
हम न किसी के कोई न हमारा, यह जग सारा द्वन्द पसारा ।
पक्षी का सा रैन गुजारा, भोर भये उड़ जावता,
कहीं और जगह करे डेरा ।।१ ।।
इक दिन है तुझ को भी जाना, फिर पीछै उलटा नहिं आना ।
पड़ा रहै सब माल खजाना, फिर काहे चित्त भ्रमावता,
झूठा घर वार बसेरा ।।२ ।।

---

१. सबही २. गर्दन ३. टेढ़ी

जिसको भाई बेटा बताता, वोही तेरी चिता बनाता।
खप्पन को भी हर ले जाता, बे रहम हौ आग लगावता,
शिर फोड़ भस्म करे ढेरा।।३।।
जो रोवै सो लोक दिखैया, या रोवै सुख अपने को भैया।
तेरे लिये कछु नाहिं करैया, फिर क्यों न प्रभु गुण गावता,
जासु वेग मिटै भव फेरा।।४।।

३४. जे दिन तुम विवेक बिन खोये

(राग सोरठ)

जे दिन तुम विवेक बिन खोये।।टेक।।
मोह वारुणी[१] पी अनादितैं, परपद में चिर सोये।
सुखकरंड चितपिंड आपपद, गुन अनंत नहिं जोये।।१।।
होय बहिर्मुख ठानि राग रुख, कर्म बीज बहु बोये।
तसु फल सुख दुख सामग्री लखि, चितमें हरषे रोये।।२।।
धवल ध्यान शुचि सलिल पूरतें, आस्रव मल नहिं धोये।
परद्रव्यनि की चाह न रोकी, विविध परिग्रह ढोये।।३।।
अब निज में निज जान नियत तहाँ, निज परिनाम समोये[२]।
यह शिव मारग समरस सागर, 'भागचन्द' हित तो ये।।४।।

३५. चेतन की सत्ता में दुख का क्या काम है

चेतन की सत्ता में दुख का क्या काम है।
परिपूर्ण ज्ञान घन आनन्द धाम है।।१।।टेक।।
मोह राग द्वेष सब पुद्गल परिणाम हैं।
ज्ञान दर्श सुख वीर्य चेतन निधान हैं।।२।।चेतन.।।
निजको भूल जग में हुआ हैरान है।
सम्यक्त्व ग्रहण किये मिले मुक्ति थान है।।३।।चेतन.।।

१. शराब २. एकाग्र

त्रिमूर्ति जैन मंदिर
श्री टोडरमल स्मारक भवन
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट